नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विवि का अनुवाद अध्ययन विभाग

अनुवादक एवं दूभाषियों की कमी पूरी करेगा –डॉ. अन्नपूर्णा

वर्धा, 26 अप्रैल 2016: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अंतर्गत संचालित अनुवाद अध्ययन विभाग देश में अनुवादकों एवं दूभाषियों की कमी को पूरा करेगा। देशभर की प्रतिष्ठित संस्थाओं से अनुवादकों एवं दूभाषियों की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए अनुवाद अध्ययन विभाग ने अपने पाठ्यक्रमों की संख्या को शैक्षणिक सत्र 2016-17 में बढ़ा दिया है। उक्त जानकारी इस विभाग की अध्यक्ष डॉ. अन्नपूर्णा चर्ले ने दी। उन्होंने बताया कि अनुवाद में शोधकार्य करने वाला यह देश का एकमात्र विभाग है और यहां सूचना एवं प्रौद्योगिकी के सहयोग से अनुवाद कार्य को बढ़ावा दिया जाता है। यही कारण है कि विभाग के विद्यार्थी देशभर की प्रतिष्ठित संस्थाएं यथा ईसीआईएल, रेल्वे, नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल, बैंक, सी-डैक, पुणे, एलआईसी, राजभाषा विभाग आईआईटी, नवोदय विद्यालय आदि में रोजगार पा रहे हैं। कई विद्यार्थी देशभर के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में अध्यापक के रूप में नियुक्त हुए हैं। विभाग के विदेशी विद्यार्थी थाईलैण्ड के सिल्पाकोर्न विश्वविद्यालय में भी अध्यापक बन गए हैं।

विभाग में अनुवाद एवं निर्वचन में एम. ए. के अलावा एम. फिल. एवं पीएच.डी. के पाठ्यक्रमों के अलावा एम.ए. (अनुवाद प्रोद्यागिकी), एम.फिल. (अनुवाद प्रोद्यागिकी), पी-एच.डी. (अनुवाद प्रोद्यागिकी), हिंदी अनुवाद में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा, प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा, निर्वचन में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा, मराठी अनुवाद में पी.जी. डिप्लोमा आदि पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

डॉ. अन्नपूर्णा ने बताया कि वैश्वीकरण के इस दौर में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिन-प्रति दिन अनुवाद की महत्ता बढ़ती जा रही है। इसे बहुआयामी एवं स्वायत्त अनुशासन के रुप में पहचान मिल चुकी है, इसीलिए इस विश्वविद्यालय में अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ प्रारंभ हुआ। यह विद्यापीठ समस्त विश्वविद्यालयों में अव्दितीय है और इसके अंतर्गत कार्यरत अनुवाद प्रोद्योगिकी विभाग देश का एकमात्र ऐसा विभाग हैं, जो अनुवाद की तकनीकी, प्रणालीगत और रोजगारपरक संभावनाओं को यथार्थ में परिणत करने के लिए सतर प्रयासरत है। विभाग के उद्देश्यों को लेकर उनका कहना है कि हिंदी को अनुवाद के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक समृध्द भाषा बनाना, हिंदी में मशीनी अनुवाद प्रणाली का विकास कराना, अनुवाद को अंतर अनुशासनिक बोध पाठ्यक्रम के रुप में विकसित करते हुए इस आधुनिक प्रोद्योगिकी के क्षेत्र के अनुरुप बनाना, अनुवाद को भाषा शिक्षण की विधा के रुप में विकसित करना, तुलनात्मक एवं अंतर अनुशासनिक शोध हेतु ज्ञान आधारित पाठ एवं साहित्य उपब्ध कराना, अनुवादको एवं निर्वचकों के कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण की व्यवस्था करना, अनुवाद हेतु विविध प्रकार के शब्दकोशों का निर्माण करना आदि इस विभाग के महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी किन-किन क्षेत्रों में रोजगार पा सकता है इसपर डॉ. अन्नपूर्णा का कहना है कि राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवादक एवं दुभाषिए के रुप में, शैक्षणिक संस्थानों

में अध्यापन के क्षेत्र में, राजभाषा अधिकारीके रुप में, बी.पी.ओ. एवं काल सेंटर में विदेशी भाषा इंटरप्रेटर के रुप में, पर्यटन उद्योग एवं होटल प्रबंधन के क्षेत्र में, अनुवाद प्रौद्योगिकी क्षेत्र में मशीनी अनुवाद और सिनेमेटिक अनुवाद का कार्य, फिल्म एवं टी.वी. में अनुवाद के रुप में तथा पत्रकारिका में अनुवाद के रुप में विद्यार्थी रोज़गार पा सकते हैं। और यहां के विद्यार्थी देशभर के विभिन्न शिक्षा तथा अन्य संस्थानों में बड़े ओहदे पर कार्यरत है।